Arts Science & Commerce College Naldurg

ISSN : 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 109-112

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

राष्ट्रीय चेतना की सुलगती अभिव्यक्ति दक्खिनी काव्य

❑ डॉ. हाशमबेग मिर्झा जावेद खलील पटेल*

शोध सारांश

मध्ययुगीन दक्खिनी साहित्य में देश प्रेम, एवं राष्ट्रीय भावना से समर्पित साहित्य लिखा गया है। इस साहित्य में देश प्रेम, भाईचारा, राजा की न्याय प्रियता, सर्वधर्म समभाव, मानवता, सैनिकों के प्रति आदर आदि का चित्रण किया है। राष्ट्रीय चेतना का परिपूर्ण चित्रण इन कवियों ने किया है। अपने देश के लिए मर मिटने का जज़्बा इनके काव्य में देखने योग्य है। नुसरति के अलीनामा में हुब्बुल वतनी (देश प्रेम) के विषय में विस्तृत रुप में प्रकाश डाला गया है। मुल्ला वजही ने 'सबरस' और 'कुतुब मुश्तरी' में, मुल्ला नुसरती ने 'अलीनामा' में, इब्ने निशाती ने 'फूलबन' में, शाह तुराब ने 'मन समझावन' में तथा गव्वासी, जानम, रुस्तमी आदि कवियों ने भी राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत साहित्य का निर्माण किया है। 'अलीनामा' वीर रस से परिपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रंथ में छत्रपति शिवाजी और मुगलों के साथ बीजापूर के संघर्ष को चित्रित किया गया है। दक्खिनी कवियों का ईस्लाम धर्म से गहरा रिश्ता था फिर भी उनके काव्य में धर्मगत और जातिगत समन्वय की भावना स्पष्ट रुप से देखी जाती है। वे अद्वैतवाद के सिद्धांत से प्रभावित हैं। इसलिए वे मनुष्य मनुष्य के बीच के अंतर को स्वीकार नहीं करते और ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। दक्खन के सभी शासक ईस्लाम धर्म के अनुयाई होते हुए भी उन्होंने बहुसंख्य हिन्दू प्रजा के देवी देवताओं के प्रति उदारता प्रकट करते हुए उनकी स्तुति की है। ईब्राहीम आदिल शाह द्वितीय 'जगतगुरु' ने किताबे नौरस में शीव, पार्वती, गणेश आदि हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन किया है। अंततः कहा जा सकता है कि दक्खिनी के लगभग सभी कवि मुस्लिम है। लेकिन जैसा कि कुरआन कहता है, अपने वतन से प्यार करो, उसकी हिफाजत करो। सभी दक्खिनी कवियों ने अपने काव्य में राष्ट्रीय चेतना को व्यक्त किया है।

Keywords : हिन्दी का आरंभिक काव्य, राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत, लगभग सभी कवि मुस्लिम कवि, दक्षिण भारत में पनपी हिन्दी की बोली।

प्रस्तावना :

हिन्दी भाषा भारत के व्यापक प्रदेश बोली जाने वाली भाषा है। उसकी अनेक बोलियाँ और उपबोलियाँ है, जो हिन्दी भाषा क्षेत्र विशेष से संबंध रखती है। अन्य बोलियों के समान दक्खिनी भी एक सामान्य जन बोली थी जो भारत के दक्खन प्रदेश में बोली जाती थी। वह धीरे धीरे पहले जनभाषा और तत्पश्चात राजभाषा के पद पर आसीन हो गयी। उसे इस पद पर पहुँचाने के लिए सामान्य जनता और दक्खन के मुस्लिम बादशाहों का बहुत बड़ा योगदान है। जिस समय दक्खिनी अपने विकास के सर्वोच्च शिखर पर विराजमान थी। उस समय सत्ता का उलट फेर और नैसर्गिक प्रवृत्ति के कारण वह एक साधरण बोली बनकर रह गयी। आज वह किसी भी प्रदेश में मुख्य बोली के रुप में बोली नहीं जाती। फिर भी इस बोली को बोलने वालों की संख्या विपुल मात्रा में दिखायी देती है। दक्खिनी हिन्दी के विकास की अवस्था में प्रचुर मात्रा में साहित्य का निर्माण हो गया था। दक्खन के गोलकोण्डा का कुतुबशाही शासन काल को इसका स्वर्णयुग कहा जाता है। इसके प्रेमाख्यान और मसनवी काव्यों में अपने राज्य का वास्तविक चित्रण के साथ काल्पनिक वर्णन भी देखने को मिलता है।

दक्खिनी का भैगोलिक क्षेत्र :–

दक्खिनी भाषा बोलनेवाले लोग भारत की दक्षीण दिशा की ओर बसे हुए थे, इसी कारण इसे दक्खिनी कहा गया है। इस क्षेत्र को मुगल सम्राट 'दक्खन' कहा करते थे। मराठी में इसे 'दक्खनचा पठार या दक्खनचा मुलुख' भी कहा जाता था। इसके क्षेत्र के संबंध में श्री राम शर्मा कहते हैं– "प्राचीन काल से ही दक्षिण भारत दो भागों में विभक्त रहा है। एक भाग तो नर्मदा से लेकर तुंगभद्रा तक और दूसरा भाग तुंगभद्रा के दूसरे किनारे से समुद्र तक, दूसरे भाग को संक्षेप में द्रविड़ कहा जाता है तथा नर्मदा और तुंगभद्रा के बीच का प्रदेश भी अनेक प्रातों में विभक्त रहा है। दण्डकारण्य, विदर्भ, महाराष्ट्र और कुछ अंश तक कर्नाटक का समावेश इसी प्रदेश में होता है। .....मुसलमान इसे 'दक्खन' कहा करते थे। पिछले 6–7 सौ वर्षो से 'दक्खन' शब्द से

*शोध निर्देशक, शोध छात्र, असोसिएट प्रोफेसर एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नलदुर्ग ता. तुलजापुर जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

Arts Science & Commerce College Naldurg

वर्तमान बेरार, हैदराबाद राज्य, महाराष्ट्र और म्हैसुर राज्य का बोध होता रहा है। इस प्रदेश की गोदावरी और कृष्णा प्रमुख नदीयाँ है।''[1] इसी क्षेत्र में दक्खिनी का विकास हुआ इसमें कोयी मतभिन्नता नहीं है। लगभग दक्खिनी के सभी विद्वान इसे स्वीकार करते हैं। डॉ. हेमचंद्र के शब्दों में –''दक्खिनी शब्द से तात्पर्य उस ऐतिहासिक भूभाग से है जो सहयाद्री पर्वतमाला से दक्षिण की तरफ फैला हुआ है। और जिसकी श्रृंखला को ही उसे महेंन्द्रगिरी से मिलाकर महानदी और गोदावरी के आबरीज बनता हुआ यह भू–भाग दक्षिण में कृष्णा और तुंगभद्रा नदी तक व्याप्त है।''[2] भौगोलिक परिसीमाओं में बाँधने की कोशिश की जाए तो कह सकते हैं। उत्तर में औरंगाबाद और जालना, उत्तर पश्चिम में अहमदाबाद, पश्चिम में अरबी समुद्र का पूरा तटवर्तीय भाग, दक्षिण में मैसूर तथा पूर्व में हैदराबाद, विजयवाड़ा एवं अमरावती तक, उत्तर पूर्व में वारंगल, करीमनगर और आदिलाबाद तक इसका प्रभाव देखा जा सकता है। ध्यान से देखने पर यह एक त्रिकोणीय आकार का प्रदेश दिखायी देता है। यह सुपीक और सांस्कृतिक दृष्टि से संपन्न क्षेत्र है। यही कारण है कि यह भाग इतिहास के प्रारंभ काल से ही बड़े–बड़े साम्राज्य का केंद्र बिंदु रहा है, और अपनी संस्कृति पूरे देश की संस्कृति में मिलाकर एक भारतीय संस्कृति के निर्माण में सहायक बना। शायद इसी कारण मुहम्मद तुग़लक ने 1327 ई.स. में इस देश की राजधानी को दिल्ली से हटाकर दौलताबाद (औरंगाबाद) को बनाया था ।

दक्खिनी हिन्दी में राष्ट्रीयता का भाव :–

मध्ययुगीन दक्खिनी कवियों ने अपने काव्य में राज्य (देश) के प्रति प्रेम और सम्मान प्रकट किया है। पूरा दक्खिनी साहित्य जन्मभूमि के प्रति आदर भावना से ओत प्रोत है। अपने देश के लिए मर मिटने का जज़्बा इनके साहित्य में देखने को मिलता है। मुल्ला वजही ने 'सबरस' और 'कुतुब मुश्तरी' में, मुल्ला नुसरती ने 'अलीनामा'में, इब्ने निशाती ने 'फूलबन' में, शाह तुराब ने 'मन समझावन' में तथा गव्वासी, जानम, रुस्तमी आदि कवियों ने राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत साहित्य का निर्माण किया है। दक्खिनी कवियों ने स्वदेश प्रेम, देशभक्ति, आश्रयदाताओं की प्रशंसा, देश के प्रति एकनिष्टता आदि को लेकर साहित्य का सृजन किया है।

दक्खिनी कवियों को अपने देश के प्रति अपार स्नेह है। उनकी दृष्टि में देश के प्रत्येक नागरिक पर मातृभूमि का कर्ज होता है। वह उससे कभी भी मुक्त नहीं हो सकता। इसके लिए देश के नागरिकों को देश सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। नुसरती का संपूर्ण काव्य तो राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है। उनके ग्रंथ 'अलीनामा' के काव्य का मूल अधार देशभक्ति और राष्ट्र प्रेम है। अलीनामा अली आदिल शाह के समय में लिखा हुआ वीर रस से परिपूर्ण काव्य है। इस काव्य में बीजापुर के शासकों के साथ मुग़ल और शिवाजी के संघर्ष का चित्रण किया गया है। अली आदिल शाह के सैनिक अपने शासक पर अपार श्रद्धा रखते हैं। उन्हे अपने राजा की अपेक्षा राज्य (उस समय राज्य को ही देश माना जाता था) पर अपार प्यार था। बीजापूर पर जब किसी शत्रु का आक्रमण होता था तो उसके साथ केवल बीजापुर के सिपाही ही नहीं लड़ते थे बल्कि संपूर्ण बीजापूर के निवासी लड़ते थे। अली आदिल शाह उनके लिए केवल एक शासक ही नहीं रहा वह उनके व्यक्तित्व के चेतना का पर्याय बन गया है। अपने शासक और राज्य के लिए मर मिटने का जज़्बा देखने योग्य है। इस प्रकार का संगठन राष्ट्रीयता के अभाव में असंभव है। नुसरती ने अपने काव्य में बीजापुर को केवल एक भूभाग न मानकर पूर्ण मनुष्य माना है–

''दखन शख्स है जिस बीजापूर तन
जूं इन्सां हमें होर अली शाह जीवन।''3

दक्खिनी के प्रसिद्ध कवि मुल्ला वजही ने अपने प्रेमाख्यान 'कुतुब मुश्तरी' में अपनी मातृभूमि के प्रति आदरभाव प्रकट किया है। 'कुतुब मुश्तरी' का नायक कुली जब बंगाल पहुँचता है तो वह उस समय भी अपने वतन 'दक्खन' को याद करता है। उसकी प्रशंसा करते हुए वह कहता है–

''शहंशाह कहे ऐ सुलक्खन सुंधर, चल आ जाएँ मिल कर दक्खन के ईधर।
दखन सा नही ठार संसार में, पंच फाजिलाँ का है इस ठार में।
दखन है नगिना अंगुठी है जग , अंगुठी कूँ हुरमत नगीना है लग।
दखन मुल्क कूँ धन अजब साज है, के सब मुल्क सर होर दक्खन ताज है।

x x x

दक्खन मुल्क भोतीच खासा अहै, तिलंगना इसका खुलासा अहै।''4

अर्थात दक्खन संसार में सर्वश्रेष्ठ है। वह अंगूठी का नगीना है। यह देश अगर सर है तो दकन उसका ताज है। इसमें भी तेलंगना राज्य सर्वश्रेष्ठ है। दक्खिनी कवि तबई ने भी जगह जगह स्वदेश प्रेम और राष्ट्र भावना का चित्रण किया है। उनकी दृष्टि में मनुष्य की पहचान उसका देश होता है। स्वदेश प्रेम को लेकर वे कहते है–

''जे कोइ याद करता न अपना वतन, ओ मर्द है पेरन असलका कफन।
अगर कोइ गुर्बत में शाही करे, अगर माल होर मिलक लाखाँ धरे।
अपसकूँ देखे खोलकर जों अँखियाँ, देवे खाक तनका वतन का निशान।
वतन सबकूँ दुनिया में प्यारा अहै, सफर है सो जो बादेबारा अहै।''5

Arts Science & Commerce College Naldurg

अर्थात प्रत्येक मनुष्य ने अपने वतन को याद करना चाहिए। अपने वतन की याद की अभाव में मनुष्य चलती फिरती लाश के समान है। यदि कोई विदेश में गया है तो उस व्यक्ति ने अपने अंतर्मन से अपने देश को याद करना चाहिए।

देश भक्ति (हुब्बुल वतन) शब्द का प्रयोग सबसे पहले मध्ययुगीन साहित्य में हुआ है। अपने राज्य के लिए समर्पित भाव से कार्य करने की प्रेरना उन्हें हुब्बुल वतन या देशभक्ति से ही प्राप्त होती है। उनकी देश भक्ति क्षणिक नहीं है। बाप दादों की मीरास है। मुघल और आदिलशाही शासकों की शत्रुता सर्वश्रुत है। मुघल आक्रमणकारी जब आक्रमण करने आते हैं तो कवि कह उठता है –

''हमन घर पै .... मुगल सा गनीम, चल्या है बद्देश होकर आजीम
अछे जिस हो मीरास हो हुब्बुल वतन, उने जीव दे घर कूं रखना जतन।''6

देश भक्ति देश के नागरीकों को एकता के सूत्र में पिरोती है। वे अपने आपसी मतभेद को भुलाकर एक हो जाते हैं। राष्ट्रीय एकता ही सेना को गौरवशाली बनाती है। दक्खिनी (बीजापुरी) सिपाही एक जाति या एक धर्म से संबंधित नहीं है। बीजापुरी सेना में बीजापुरी प्रजा के साथ दिल्ली के पठान भी हैं। जिन्हें मुगलों का खून बहुत ही प्रिय है। नुसरती 'अलीनामा' में कहते हैं–

''पठानां जो देहली के हैं नामदार ,
मुगल के ओ ल्हउ के हैं प्यारे अपार ।''

इसमें नुसरती ने पठान और मुगलों की शत्रुता की ओर संकेत किया है।

दक्खिनी कवियों अपने काव्य में देशभक्ति के पश्चात वीरता पर अधिक बल दिया है। वस्तुता उच्च कोटी की देशभक्ति ही ही वीरता में परिवर्तित हो जाती है। वीर सैनिक ही राज्य की रक्षा किया करते हैं। कोई भी सेना केवल वेतन, लूटपाट की छूट अथवा अत्याचार की अभिलाषा से महान नही बन जाती। देशभक्ति की परिणती वीरता में हो जाती है तो तुच्छ से तुच्छ सैनिक महापराक्रमी वीर बन जाता है। दक्खिनी के अधिकांश कवि स्वयं एक सैनिक थे या युद्ध की गतिविधीयों को उन्होंने नजदीकी से देखा था। उनका यह वर्णन आँखो देखा है। नुसरती के 'आलीनामा' में इसके अनेक उदा. देखने को मिलते हैं। नुसरती स्वयं एक सिपाही थे उन्होंने अनेक युद्ध लड़े हैं। बीजापुर का जो नागरिक सैनिक नहीं बना थावह सैनिक पर अपार श्रद्धा रखता है। बीजापुर में अनेक वीरों ने जन्म लिया है। नुसरती का मानना था जो जाति सिपाही के प्रति आदर नही रखती,उसे सन्मान नही देती वहाँ की जाति में वीर जन्म नहीं लेता –

''समजता है जो मर्द सिपाही की कद्र, सिपाही जो समजे सिपाही की कद्र।
सिपाही के हम टीक(?) कूं मान दे, सिपाही कूं सफ में अवल पान दे।
सिपाही ते है बादशाही कू जोर, दिखे सफ की खूबी सिपाही थे होर।''7

कवि सिपाही का वर्णन करते हुए लिखते है कि सिपाही कभी किसी पर अत्याचार नहीं करता। वह अच्छे के लिए अच्छा और बुरे के लिए बुरा है। वह अपने स्वामी और राज्य की रक्षा के लिए प्राणतक निछावर करने के लिए तैयार रहता है। 'आलीनामा' में नुसरती लिखते है, युद्ध वीरों के लिए त्यौहार है। जब मुघल सेनापति जयसिंह के बीजापूर पर अक्रमण की सूचना मिलती है बीजापूर युद्धके लिए सन्नध हो गया है। उनके लिए युद्ध एक त्यौहार (ईद) है। त्यौहार एक दिन का होता है, यह त्यौहार कितने दिन चलेगा कहा नही जा सकता –

''दिसे कोट पर रोज अत रोज ईद, हरेक रात शबरात गैती पदीद।
तटे तट हजारां हिलाला लगाय, चंदर जो बुर्जा पै अत लकलकाय।''8

राष्ट्रीय भावना के लिए अपने देश (राज्य) का शासक और उसकी व्यवस्था पर विश्वास होना आवश्यक है। यदि कोयी शासक प्रजा के हीत के साथ जुड़कर अपने दायीत्व का निर्वाह करता है तो वह आवश्य ही प्रशंसा का पात्र है। दक्खन के सभी शासक प्रजाहितौषी थे। यही कारण है कि दक्खिनी के जितने भी दरबारी कवि हुए हैं उन सभी ने अपने देश के साथ साथ अपने आश्रयदाताओं की भी प्रशंसा की है। मुल्ला वजही ईब्राहीम कुतुबशाह और कुली कुतुबशाह इन दोनों की प्रशंशा करते हुए कहते हैं–

''ईब्राहीम कुतुबशाह राजाधिराज, शहंशाह है शहंशाह में आज ।
जिते पादशाहाँ है संसार कं, भिकारी हैं सब उनके दरबार के ।

x x x

यता दाद इन्साफ होर अदल, के मुर्गा बी कूँ बाज का डर न था।''9

इस प्रकार दक्खनी कवियों ने अपने शासकों को सर्वश्रेष्ठ मानकर उसकी न्याय प्रियता की भूरी–भूरी प्रशंसा की है।

दक्खिनी के लगभग सभी कवियों का इस्लाम धर्म से गहरा रिस्ता था फिर भी उनके काव्य में धर्मगत और जातिगत समन्वय की भावना स्पष्ट रुप से देखी जाती है। दक्खिनी के अधिकांश कवि **अद्वैतवाद** के सिद्धांत से प्रभावित हैं इसलिए वे मनुष्य मनुष्य के बीच के अंतर को स्वीकार नहीं करते और ईश्वर को सर्वव्यापी मानते हैं। दक्खिनी के प्रसिद्ध कवि काजी महमूद बहरी अपनी रचना 'मनलगन' में ईश्वर की सर्वव्यापकता को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं–

''ऐ रुप तेरा रत्ती रत्ती है,परबत परबत पत्ती पत्ती है।

Arts Science & Commerce College Naldurg

परबत में ओक न पत्ती में, यक सा रहे रास होर रत्ती में।''10

दक्खन के सभी शासक इस्लाम धर्म के अनुयाई होते हुए भी बहुसंख्य हिन्दू प्रजा के देवी देवताओं के प्रति आदर भाव प्रकट किया तथा उनकी स्तुति की है। जो उनकी धार्मिक उदारता को स्पष्ट करती है। ईब्राहिम आदिल शाह द्वितीय 'जगतगुरु' ने किताबे नौरस में हिन्दू देवी देवताओं का वर्णन करते हुए भगवान शिव के विषय में लिखते हैं–

''दुरमुकाम भैरव नौरस, भैरव करपूत गौरा भाल तिलक चन्दरा
तिरी नेत्र जटा कुकुट गंगा धरा, एक हस्त रुंड नरा त्रिशुल जुगल करा
ब्हन बालि वरुद (वर्ध) सीत जात गुसाई ईश्वरा,
कास कुरुत कुँजर पृष्ठ चर्म वयाग्रा।''11

निष्कर्ष :–

मध्ययुगीन दक्खनी काव्य राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत है। हिन्दू मुस्लिम इन दो धर्मों की समन्वयवादिनी विचारधाराओं को आगे बढ़ाने वाला यह साहित्य है। यह साहित्य एक जाति विशेष का साहित्य न होकर संपूर्ण मानव जाति को समाहित करने वाले गुण इसमें दिखाई देते है। देश प्रेम और मातृभूमि के लिए मर मिटने का जज़्बा इस साहित्य की रचनाओं में स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। यह साहित्य मूलतः भक्तिकाल की सीमा में आत है। यदि इस साहित्य का समावेश भक्ति साहित्य में कर दिया जाए तो निश्चित रुप में भक्तिकालीन साहित्य समृद्ध हो जाएगा। अतः इसका समावेश भक्तिकालीन साहित्य में करना आवश्यक है।

सन्दर्भ :–

1. दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास– डॉ. श्रीराम शर्मा पृ. 10
2. डॉ. हेमचंद्र राय
3. नुसरती – आलीनामा पृ.363
4. कुतुब मुश्तरी – मुल्ला वजही ,सं.विमल वाघ्रे पृ.71
5. दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा –महापंडित राहुल सांकृत्यायन पृ. 289
6. नुसरती – अलीनामा पृ.257
7. नुसरती – अलीनामा पृ.227,228
8. नुसरती – अलीनामा पृ.237
9. कुतुब मुश्तरी – मुल्ला वजही ,सं.विमल वाघ्रे
10. दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन – सं. परमानंद पांचाल, पृष्ठ क्रमांक–361
11. दक्खिनी हिन्दी काव्य संचयन– संपादक– परमानंद पांचाल, पृष्ठ क्रमांक–317

PRINCIPAL
Arts Science & Commerce College
Naldurg, Dist.Osmanabad-413602